HindiHelpGuru.com

DELED Assignment Answer – HindiHelpGuru

504 Assignment 1 – Question 2

प्रश्न : रचनावादी शिक्षण की कोई तीन विशेषताए लिखिए. इन तीनो विशेषताओ का उपयोग आप कक्षा 2 के बच्चो को आकृतियो की अवधारणा सिखाने में किस प्रकार करोगे?

उत्तर :

रचनात्मकता शिक्षण की एक ऐसी रणनीति है जिसमें विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान, आस्थाओं और कौशल का इस्तेमाल किया जाता है। रचनात्मक रणनीति के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सूचना के आधार पर नई किस्म की समझ विकसित करता है।
इस शैली पर काम करने वाला शिक्षक प्रश्न उठाता है और विद्यार्थियों के जवाब तलाशने की प्रक्रिया का निरीक्षण करता है, उन्हें निर्देशित करता है तथा सोचने-समझने के नए तरीकों का सूत्रपात करता है। कच्चे आंकड़ों, प्राथमिक स्रोतों और संवादात्मक सामग्री के साथ काम करते हुए रचनात्मक शैली का शिक्षक, छात्रों को कहता है कि वे अपने जुटाए आंकड़ों पर काम करें और खुद की तलाश को निर्देशित करने का काम करें। धीरे-धीरे छात्र यह समझने लगता है कि शिक्षण दरअसल एक ज्ञानात्मक प्रक्रिया है। इस किस्म की शैली हर उम्र के छात्रों के लिए कारगर है, यह वयस्कों पर भी काम करती है।

रचानावादी शिक्षण तीन विशेषताए

1. अनुभव से सिखाना :

रचानावादी शिक्षण बाल-केन्द्रित शिक्षा शास्त्र का मुख्य आधारभूत सिद्धांत है । इस व्यवस्था में बच्चों के अनुभवों , उनकी जिज्ञासाओं और उनकी सक्रिय सहभागिता को केंद्र में रख कर पठन पाठन हेतु वातावरण तैयार किया जाता है / बाल केन्द्रित व्यवस्था में शिक्षक एक सुगमकर्ता के रूप में बच्चो को सीखने हेतु यथोचित सामग्री , सीखने की सहज

परिस्थितियों को उपलब्ध कराने और निरंतर उनका सतत और व्यापक मूल्यांकन करते हुए उन्हें अपनी क्षमताओ के विकास के अवसर उपलब्ध कराने की महती भूमिका का निर्वहन करता है ।

2. पूर्व व वर्तमान ज्ञान से सिखाना :

रचानावादी शिक्षण एक ऐसी सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाला अपने पूर्व व वर्तमान ज्ञान के आधार पर नए विचार या अवधारणाओं को रचता है। सीखने वाला सूचनाओं को चुनकर उनका रूपांतरण करता है, प्रस्थापनाएं बनाता है, निर्णय लेता है और ऐसा करते समय वह एक ज्ञानात्मक ढांचे पर भरोसा करता है। ज्ञानात्मक संरचनाएं (योजना, मानसिक प्रारूप) अनुभवों को संगठित कर सार्थक बनाती हैं और व्यक्ति को 'उपलब्ध सूचनाओं' के पार जाने का मौका देती हैं।

3. छात्र केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया :

रचानावादी शिक्षण वास्तव में एक ऐसी प्रक्रिया है जो अवलोकन और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है. जिसमे बच्चे कैसे शिखते है ये ज्ञात होता है. ये बच्चो से केन्द्रित अध्ययन प्रणाली है जिसमे बच्चो के वर्तमान ज्ञान का इस्तेमाल किया जाता है. गतिविधि प्रेरित शिक्षण प्रक्रिया होने के कारण बचे गतिविधियों का मजा लेते हुए सिखाने के लिए तत्पर हो जाते है. इसमे बच्चो के विशेष पूर्वज्ञान की भी जरुरत नहीं होती है.

आकृतियो की अवधारणा सिखाना:

स्कूल में दाखिला लेने के पहले, परिवेश और पास-पड़ोस से पारस्परिक क्रियाओं के दौरान बच्चे का विभिन्न आकारों व आकृतियों (2-D और 3-D) से सामना होता है। उसे इस बात की समझ होती है कि हर चीज का एक आकार होता है। हर आकार की कुछ आसानी से पहचानी जाने वाली विशेषताएँ होती हैं जिन्हें देखा जा सकता है, पहचाना जा सकता है, नाम दिया जा सकता है, उनका वर्णन किया जा सकता है और उन्हें वर्गीकृत भी किया जा सकता है। इन आकारों के विभिन्न उदाहरणों से बच्चे का परिचय पहले से ही होता है।

प्रक्रिया : 1

HindiHelpGuru.com

विद्यालय परिवेश में इस्तेमाल होने वाली रोजमर्रा की वस्तुओं जैसे घनाभ, बेलन, गोला और आमतौर पर सामने आने वाली आकृतियों जैसे आयत, वृत्त, चौकोर, त्रिभुज आदि से आकार का परिचय कराना.

इसके लिए बच्चो के सामने इन सभी चीजो को रखना चाहिए या फिर ऐसी चीजो के पास बच्चो को भेजना चाहिए. बाद में बच्चो से अधिगामकर्ता द्वारा कुछ प्रश्नोत्तरी करनी है. जिसे...

शिक्षक : " बताओ रेशमा, ये क्या है ?

रेशमा : " सर, ये तो मटका है."

शिक्षक : " ये कैसा (आकार) है ? "

रेशमा : " ये तो ऐसा है . (अगर इसे आकार ना नाम पता नहीं है तो इशारे से बताएगी)

शिक्षक : अरे वाह ! आपको to मालूम है. तो इसे कहते है "गोल या गोलाकार "

हालाँकि यहाँ यह ध्यान रखना जरूरी है कि बच्चा शायद इन सब नामों से परिचित न हो और इसलिए इस शब्दावली से उसका परिचय तभी कराया जाना चाहिए जब वह किसी आकृति और उसके व्यवहार से अच्छी तरह वाकिफ हो जाए। तब तक बच्चा आसान किस्म के वर्णन 'सूरज जैसा', 'दरवाजे जैसा', 'गेंद जैसा', 'बक्से जैसा' इत्यादि का इस्तेमाल कर सकता है।

प्रक्रिया : 2

शुरुआती कुछ सालों में की जाने वाली कई सारी गतिविधियों में आकृतियों (2-D और 3-D) से खेलना व उनके व्यवहार को समझना शामिल होता है। बच्चे आकृतियों को आपस में जमाकर, उन्हें घुमाकर, पैटर्न में जमाकर और उनके जरिए एक पूरी तस्वीर बनाकर स्वाभाविक रूप से आकृतियों की छानबीन करते हैं। इन प्रक्रियाओं के दौरान वे इन आकृतियों की विशेषताएँ, किस तरह यह आकृतियाँ आपस में जुड़ जाती है, कैसे कुछ आकृतियों को मिलाकर कुछ दूसरी आकृतियाँ बनाई जाती हैं, आकृति के किसी एक गुण के बदलाव करने से आकृति पर क्या प्रभाव पड़ता है आदि बातों को अपने दिमाग में बिठा लेते हैं।

HindiHelpGuru.com

प्रक्रिया 1 के दौरान बच्चे आयत, वृत्त, चौकोर, त्रिभुज आदि आकारो से परिचित हो जाते है तो आप अब इसे घनक्षेत्र के बारे में भी सिखाया जाता है. इसके लिए कागज मोड़कर की जानेवाली गतिविधियाँ भी कारगत होती है.

बच्चो के सामने जिस आकार को सिखाना है इस आकार की चीज (Box) को बच्चो के सामने रख देंगे. अब बच्चो को कागज़ दिया जायेगा और बच्चो से कहेंगे ऐसी चीज आप बनाओ. बच्चे बना नहीं पायेंगे पर प्रयास करेंगे. इससे बच्चो को ये ज्ञान आर्गन होगा की इस चीज की भुजा कितनी है. इसकी लम्बाई - फैलाव कितनी है.

बाद में शिक्षक एक कागज़ लेंगे और बच्चो से कहेंगे की अब मैं करता हु वैसे करो. बच्चे अध्यापक की नक़ल करके किसी भी आकार की चीज बनाने का प्रयास करेंगे.

कागज मोड़कर करने वाली गतिविधियों को 4 साल की उम्र के बच्चे ठीक-ठीक मोड़ बनाने लगते हैं, लेकिन एकदम सही मोड़ बनाना 7 बरस की उम्र तक ही आ पाता है। इसी तरह बच्चे मूलभूत ज्यामितीय आकृतियों को काफी जल्दी पहचानने लगते हैं और कागज मोड़कर उन्हें बनाने में शिक्षक की नकल भी कर लेते हैं लेकिन बिलकुल ठीक-ठीक आकृति बनाना आमतौर पर 7 बरस की उम्र तक ही आ पाता है।

इस तरह कई तरह की गतिविधिया रचनात्मकता शिक्षण प्रक्रिया में अपनाई जाती है जिससे बच्चे आसानी से सिखाने - समजने लगते है.

अन्य Solved Assignment Answer पाने के लिए यहाँ क्लिक करे

HindiHelpGuru.com

Download

HindiHelpGuru.com